बाजरा की फसल
कृषि कुंभ (सितंबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 04–08

बाजरा की फसलः प्रमुख रोग व कीट एवं उनका रोकथाम

श्याम नारायण पटेल[1], विश्व विजय रघुवंशी[2] एवं डॉ. रमेश चन्द[3]
[1]शोध छात्र (पादप रोग विज्ञान), [2]शोध छात्र (पादप रोग विज्ञान),
[3]सह–प्राध्यापक (पादप रोग विज्ञान),
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०), भारत।
Email Id: patelshyamnarain@gmail.com

बाजरा की फसल के प्रमुख रोगः

बाजरे का तुलासिता व हरित बाली रोग लक्षणः

बाजरे का तुलासिता और हरित बाली रोग दोनों ही पौधों में पाये जाने वाले फफूंदी रोग हैं जो प्रादेशिक और मौसमिक प्रमाणों में उत्पन्न होते हैं। इन रोगों के लक्षण निम्नलिखित हो सकते हैं:

- **पत्तों पर धब्बेः** रोग के प्रारंभिक चरण में पत्तों पर सबसे पहले हल्के पीले या सफेद धब्बे दिखाई देते हैं। इन धब्बों का आकार बढ़ता जाता है और वे गहरे भूरे रंग के हो जाते हैं।
- **छालों का पतला होनाः** धीरे–धीरे, पत्तों की छालें पतली होती जाती हैं और फटने लगती हैं। इससे पत्तियाँ निर्वाह में असमर्थ हो जाती हैं और पत्ती के भागों का सूखना शुरू हो जाता है।
- **पत्तों का मोरपंखी होनाः** रोग के उन्नत चरण में, पत्तियों का आकार मोरपंख के समान होने लगता है। इससे पत्तियों का समानांतर विकास होता है और पौधे की विकास प्रतिधीन हो जाती है।
- **गुच्छों का रूपांतरणः** अधिक संक्रमित पौधे पर, गुच्छे या पुष्प भ्रंशित होने लगते हैं। ये गुच्छे आवश्यकता से अधिक संख्या में बनते हैं और असामान्य आकार और रंग के होते हैं।
- **फूलों का न खिलनाः** पूरी तरह संक्रमित पौधे पर फूल नहीं खिलते हैं और फूलों की विकास रुक जाती है। फूलों के बजाय गुच्छे या दूसरे असामान्य भूषण उत्पन्न हो सकते हैं।

यदि आपके बाजरे के पौधों पर इन लक्षणों की संकेत मिल रही हैं, तो संभवतः आपके पौधे इन रोगों से प्रभावित हो रहे हैं। बेहतर होगा कि आप किसानी विशेषज्ञ से परामर्श लें और उचित रोगनिदान और नियंत्रण के लिए सलाह लें।

बाजरे का अरगट (चौप्पा रोग) लक्षणः

बाजरे का अरगट, जिसे चौप्पा रोग भी कहा जाता है, एक फसल संक्रमण है जो बाजरे (ज्वार) पर प्रभावित होता है। इस रोग के कुछ मुख्य लक्षण हैं:

- पौधों पर सफेद रंग की छोटी–छोटी दानेदार पत्तियां दिखाई देती हैं, जो बाद में काली हो जाती हैं।
- इन पत्तियों पर छोटे–छोटे सफेद दाने उभरते हैं, जिन्हें "चौप्पा" या "अरगट" कहा जाता है।

- यह दाने बाद में बड़े हो जाते हैं और पत्तियों को पूरी तरह से आवरण कर लेते हैं।
- रोग के प्रभावित पौधों का विकास मंद होता है और पौधों की ऊंचाई कम होती है।
- चौप्पा रोग के संक्रमित पौधों की प्रतिष्ठा और सजीवता प्रभावित होती है, जिसके कारण उन्हें नष्ट होने की संभावना होती है।
- बाजरे की फसल में मात्रा में कमी देखी जा सकती है और उत्पादन में भी कमी हो सकती है।

अगर आपको लगता है कि आपकी बाजरे की फसल पर चौप्पा रोग है, तो मैं सिफारिश करूंगा कि आप स्थानीय कृषि विशेषज्ञ से संपर्क करें ताकि वे सही निदान और उपचार की सलाह दे सकें।

ब्लास्ट रोग:

बाजरे की खेती में ब्लास्ट रोग रोग का प्रभाव पौधों की पत्ती, तने और सिट्टा तीनों पर देखने को मिलता हैं। पौधों पर लगने वाला ये एक कवक रोग हैं. इस रोग के लगने से पौधों की पत्ती और तने पर पीले और गहरे भूरे रंग के लम्बे आकार के धब्बे बनने लग जाते हैं। इस रोग के लगने से पौधों का विकास रुक जाता हैं. जिसका असर पौधों की पैदावार पर देखने को मिलता है।

रोग की रोकथाम:

- इस रोग की रोकथाम के लिए ट्राइफलोक्सीस्ट्रोबिन 25 प्रतिशत या टेबुकोनाजोल 50 प्रतिशत की 5 ग्राम मात्रा को 10 लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर 15 दिन के अंतराल में दो बार छिड़कना चाहिए।
- इसके अलावा प्रोपिकोनाजोल 25 ईसी की 50 मिलीलीटर मात्रा को 100 लीटर पानी में मिलाकर पौधों पर छिड़कने से लाभ मिलता हैं।

रोली रोग:

इस रोग से पत्तियों पर लाल भूरें रंग के छोटे–छोटे धब्बें बनते हैं। जो कि हाथ से रगड़ने पर हाथ पर लाल भूरा चूर्ण लग जाता हे। जो बाद में काले रंग के हो जाते है। यह रोग अधिक आद्रर्ता वाले क्षेत्रों में अधिक होता है।

रोग की रोकथाम:

- इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही फंफूदनाशक मेन्कोजैब 2 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करने से रोग को बढ़ने से रोका जा सकता है। यदि आवष्यक हो तो 15 दिन मे छिड़काव दोबारा करें।

बाजरे का प्रमुख कीट:

बाजरे का प्रमुख कीट दीमक लक्षण:

बाजरे के प्रमुख कीटों में एक मुख्य कीट है ''दीमक'' जिसे अंग्रेजी में '' स्टेम बोरर'' कहा जाता है। यह कीट बाजरे के पेड़ की स्टेम (तना) में अंडे और लार्वा के रूप में बस जाता है और इसके कारण पेड़ का प्रमुख नुकसान होता है।

दीमक के प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हो सकते हैं:

- दीमक के लार्वा बाजरे की सबसे ऊपरी पेड़ की पाल तना में घुस जाते हैं और ताल में अंडे रखते हैं।
- इनकी लार्वा सबसे पहले पेड़ के अंडकोष में फंस जाती हैं और फिर ताल के भीतर घुस जाती हैं।

- लार्वा ताल की अंदरूनी ऊपरी पाल तना को खोखला करके उसमें खोदती है और जब यह बढ़ जाती है, तो वह ताल की संरचना को तोड़ती है और नुकसान पहुंचाती है।
- दीमक के संकेत में पेड़ के पत्तों का पीला होना, सूखना और मुरझाना शामिल हो सकता है।
- पेड़ की पाल तना में गहरे और खुरदरा छेद देखा जा सकता है, जिससे पेड़ की संरचना में कमजोरी आती है।
- बाजरे के पेड़ की ऊपरी पाल तना में स्थानांतरित लार्वा दिखाई दे सकती है, जिसे आंखों से देखा जा सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपके बाजरे के पेड़ पर दीमक की समस्या हो सकती है, तो आपको किसानी विशेषज्ञ या स्थानीय कृषि विभाग की सलाह लेनी चाहिए। वे आपको सही रणनीति और कीटनाशकों के बारे में बता सकेंगे जो आपकी समस्या को हल करने में मदद कर सकते हैं।

बाजरे का तनाछेदक कीट लक्षण:

बाजरे के शस्त्रागार कीटों के लक्षण कई प्रकार के हो सकते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हो सकते हैं:

- **पत्तों पर सफेद धब्बे:** अगर बाजरे के पत्तों पर सफेद धब्बे दिखाई देते हैं, तो यह तनाछेदक कीटों की एक सामान्य लक्षण हो सकती हैं।
- **पत्तों की खाद्य नलियों का बनना:** यदि बाजरे के पत्तों पर छोटी–छोटी खाद्य नलियाँ बन जाती हैं, तो इसका मतलब हो सकता है कि तनाछेदक कीटों ने पौधे को प्रभावित कर दिया है।
- **गांठों की उत्पत्ति:** तनाछेदक कीटों के होने पर, बाजरे के पत्तों पर छोटी गांठें बन सकती हैं। ये गांठें पत्तों के ऊपरी और निचले सतह पर पायी जा सकती हैं।
- **पत्तों का सुखना:** तनाछेदक कीटों के होने पर, बाजरे के पत्ते सूखने लगते हैं और पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है।
- **पौधे की कमजोरी:** तनाछेदक कीटों के प्रभाव से बाजरे का पौधा कमजोर हो सकता है। पत्तियों का ध्यान गायब हो सकता है और पौधे की विकास रुक सकता है।

अगर आपको लगता है कि आपके बाजरे पौधे में तनाछेदक कीटों का संकेत है, तो मैं सिफारिश करूँगा कि आप स्थानीय कृषि विशेषज्ञ से संपर्क करें जो आपको सही विशेषज्ञता और सलाह प्रदान कर सकते हैं। उन्हें आपके पौधे को देखकर और संकेतों को मापन करके विश्वस्त करना चाहिए कि क्या वास्तव में तनाछेदक कीट हैं और आपको कौन सी उपाय करनी चाहिए।

बाजरे का तना मक्खी कीट लक्षण:

बाजरे का तना मक्खी कीट जो वार्मिन कॉर से भी जाना जाता है, एक प्रमुख खेतीबाड़ी कीट है जो बाजरे के पौधों पर प्रभाव डालती है। यह कीट बाजरे के तने (स्टेम) में अपनी गोंध रखती है और पौधे के पोषण स्रोतों को नष्ट करती है। इसके इन्फेक्शन का पता चलने पर, इसके निम्नलिखित लक्षणों को ध्यान में रखना चाहिए:

- **पत्तों के सुखना:** बाजरे के पत्ते सूखने लगते हैं और पत्तियों की काली होने का दृश्य प्राप्त होता है।
- **टनेलिंग:** मक्खी कीट तने के अंदर गोंध का निर्माण करती है, जिससे तने पर छोटी–छोटी गलियां बन जाती हैं। ये गलियां टनेलिंग कहलाती हैं और इन्हें देखना इंफेक्शन के लक्षण के रूप में माना जाता है।
- **पौधे की कमजोरी:** मक्खी कीट के इंफेक्शन के कारण पौधे में कमजोरी आती है, जिसके कारण पौधा ढीला दिखने लगता है।
- **पौधे की मरना:** अगर मक्खी कीट का इंफेक्शन बहुत अधिक होता है, तो पौधा मर जाता है और बाजरे का उत्पादन होने से पहले ही नष्ट हो जाता है।

यदि आपके बाजरे के पौधों पर इन लक्षणों की पहचान होती है, तो आपको उपयुक्त कीटनाशकों का उपयोग करके अपनी फसल की सुरक्षा करनी चाहिए। हमेशा एक पेशेवर कृषि विशेषज्ञ से सलाह लेना अच्छा होगा जिससे आपको सही और व्यावसायिक उपाय दिए जा सकें।

बाजरे का ग्रास होपर कीट लक्षण:

बाजरे के ग्रास होपर कीट के लक्षणों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- **पौधों पर छोटे–छोटे पीले या हरे रंग के कीट:** बाजरे के पौधों पर होपर कीट के आक्रमण के बाद, आप छोटे–छोटे पीले या हरे रंग के कीट देख सकते हैं जो पौधों के पत्तों पर चढ़ जाते हैं। ये कीट पत्तों को छूते हैं और उनकी रसस्सी चूसने के कारण पौधों की पोषण क्षमता में कमी हो जाती है।
- **पत्तों की लकड़ी और सूखावट:** होपर कीट के आक्रमण के परिणामस्वरूप, बाजरे के पत्तों पर लकड़ी और सूखावट के लक्षण दिखाई देते हैं। पत्ते सुनहरे या भूरे हो जाते हैं और धीरे–धीरे सूखने लगते हैं।
- **पौधों की स्वास्थ्य कमजोरी:** होपर कीट के आक्रमण से पौधों की स्वास्थ्य कमजोर हो जाती है। पौधे कमजोर और विकसित नहीं होते हैं, जिससे उनका उचित विकास रुक जाता है।
- **बाजरे की उत्पादनता में कमी:** होपर कीट के आक्रमण से बाजरे की उत्पादनता में कमी हो सकती है। इसका कारण होपर कीट पौधों के पोषण क्षेत्र को चूस लेते हैं और पौधे के विकास को रोक देते हैं।

अगर आपके बाजरे के ग्रास होपर कीट के लक्षणों की संदेह है तो आपको किसानी विशेषज्ञ से सलाह लेनी चाहिए। वे आपको सही और सटीक जानकारी प्रदान करेंगे और आपको कीटों से निपटने के लिए उपयुक्त उपाय बताएंगे।

बाजरे का चाफर बीटल कीट लक्षण:

बाजरे के शस्त्रीय चारे में बीटल कीट एक सामान्य पेड़ रोग हो सकता है, जिसे "बाजरे का चाफर" भी कहा जाता है। इसके लक्षणों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- पत्तों पर छोटे या बड़े गहरे धार्यमान नीले या काले रंग के निशान। इन निशानों को अक्सर चाफर कीट द्वारा काटा गया पत्ता माना जाता है।

- पत्तों के छाले के नीचे रंगीन रेखाओं का उपस्थित होना।
- पत्तों का सूखना और पत्तियों की उछाल या गिरावट होना।
- पौधों की मरने या सुखने की गति की वृद्धि।
- पौधों के बाजरे की जड़ों का कमजोर होना और मरना।
- बाजरे की मुख्य डांटों (सबकुछा) के काले या नीले रंग के छिद्रों का उपस्थित होना।
- अधिकतर इंफेक्शन ग्रस्त पौधों में फलने वाले अनियमित, कमजोर और छोटे बाजरे के धान्यों का उत्पादन।
- आंध्रयामान लक्षण जैसे कि पौधों के बाजरे की जड़ों पर मांसल रंग की कीट की अवशेष देखना।

यदि आपके बाजरे पौधे इन लक्षणों में से कुछ में से एक या अधिक को मिलता है, तो बहुत संभावना है कि आपके पौधे को चाफर कीट ने प्रभावित किया होगा। इस स्थिति में, सलाह दी जाती है कि आप किसानी विशेषज्ञ से संपर्क करें या स्थानीय कृषि विभाग से सलाह लें, ताकि आपको उचित उपाय और कीटनाशक दवाओं की जानकारी मिल सके।

बाजरे का सफेद लट कीट लक्षण:

बाजरे का सफेद लट कीट एक प्रकार की फसल बीमारी हो सकती है जिसे बाजरे के पौधों पर देखा जा सकता है। इसे "बाजरे का सफेद लट रोग" भी कहा जाता है। यह रोग अक्सर अधिक नमी और तापमान के क्षेत्रों में पाया जाता है, जहां इसकी प्रभावित प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

बाजरे का सफेद लट कीट के लक्षणों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

- **पौधों पर सफेद रंग की लट**: सबसे पहला और प्रमुख लक्षण है कि बाजरे के पौधों पर सफेद रंग की लटें दिखाई देती हैं। ये लटें शुरुआत में छोटी होती हैं और धीरे–धीरे बढ़ती जाती हैं।
- **पौधों की कमजोरी**: बाजरे के सफेद लट कीट के संक्रमण से पौधे कमजोर हो जाते हैं। पौधों की विकास रुक जाती है और वे अपनी सामान्य ऊँचाई नहीं प्राप्त कर पाते हैं।
- **पत्तों की पीलापन**: संक्रमित पौधों के पत्ते पीले दिखाई देते हैं। पहले पत्ते की नसें हरी और स्वस्थ दिखती हैं, लेकिन धीरे–धीरे पीले हो जाती हैं।
- **फूलों और अनाज की कमी**: सफेद लट कीट के संक्रमण से बाजरे के पौधों पर फूल और अनाज की कमी हो सकती है। यह फसल के उत्पादन पर असर डालता है और उच्चतम मात्रा में पौष्टिकता की आवश्यकता को पूरा करने में असमर्थ होता है।

अगर आपके बाजरे के पौधों पर इन लक्षणों को देखा जाता है, तो यह संभावित है कि आपकी फसल को सफेद लट कीट संक्रमित हो गई है। आपको एक पेस्टिसाइड या कीटनाशक का उपयोग करके कीट संक्रमण को नियंत्रित करने की सलाह दी जा सकती है, लेकिन सर्वोत्तम परिणामों के लिए आपको स्थानीय कृषि विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।